

Padma Shri



DR. SHYAMAMANI DEVI

Dr. Shyamamani Devi is a living legend with a towering personality in "Odishi", a classical music genre in India. She is the most popular and decorated AIR (All India Radio) artist with a "Top Grade" credit. She is popular on all the Odia TV channels, including DD Bharati.

2. Born on 21st December, 1938 to the late Nishamani, and Rajendra Patnaik, at Cuttack, Odisha, Dr. Shyamamani is a graduate (Sangeet Visharad) in "Odishi" Vocal from Sangeet Natak Academy, Odisha, under the guidance of the late Guru Singhari Shyamsundar Kar and Sangeet Sudhakar Balkrishna Dash. She is also a postgraduate (Sangeet Alankar) in Hindustani Vocal from Gandharba Mahavidyalay, Pune, under Prof. B. R. Navarang. She started her career as a child artist of AIR (All India Radio) at 12 years old, gaining prominence at Cuttack, Kolkata, and Mumbai AIR stations. She also earned a reputation as a famous playback singer for Odia and Bengali films during the 1960s and 1970s.

3. Dr. Shyamamani left the glamorous career in her prime age as a playback singer and dedicated her life to particular reference to the traditional music forms that remained confined to a few areas and were in a state of extinction. The traditional music "Odishi" immensely impressed her. She initially concentrated on "Champu", "Chhanda", "Chautisa", "Bhajana", "Janana", and 'Gita Govinda', etc., which are considered to be the various aspects of "Odishi". With extensive studies and efforts, audio cassettes for these music forms were released for the first time with her composition and brought to the knowledge of the common masses for their revival and popularization further through AIR and live performances in every nook and corner of the state.

4. Through over 4000 songs, Dr. Shyamamani has enthralled audiences spanning more than seven and a half decades of a music career in classical "Odishi," allied music forms of Odishi, devotional songs, Adhunik and Sugam Sangeet, folk songs, and Palli Geeti. She also has pieces in different languages, like Ghazals in Hindi and Marathi, Ravindra Sangeet in Bengali, Gorba in Gujrati, and a dozen film songs in Odia and Bengali. She has also made major contributions to the systematic development of Odishi music and the codification of its grammar.

5. In recognition of her contribution to "Odishi" music, Dr. Shyamamani has been conferred an honorary doctorate (Ph.D.) by the Utkal University of Culture, Bhubaneswar. The Odisha government has also granted the highest award, "Upendra Bhanjo Sanman." About 200 awards, felicitations, and over 12 titles, such as "Nightingale of Odisha," "Kokilo Konthhi," "Suro-Torangini," "Geeta Priya," etc., are already to her credit from various government, public, and private institutions in Odisha and other states, and overseas. The Ministry of Culture and Tourism, the Government of India, has also released a documentary film on her life and achievements, besides several articles.

पद्म श्री



डॉ. श्यामामणि देबी

डॉ. श्यामामणि देबी भारत की शास्त्रीय संगीत शैली "ओडिशी" की एक महान कलाकार और जीवंत आख्यान हैं। वे आकाशवाणी (ऑल इंडिया रेडियो) की सर्वोच्च ग्रेड धारक और सबसे लोकप्रिय तथा प्रतिष्ठित कलाकार हैं। वे डीडी भारती सहित सभी ओड़िया टीवी चैनलों पर लोकप्रिय हैं।

2. 21 दिसंबर, 1938 को दिवंगत निशामणि और राजेंद्र पटनायक के घर कटक, ओडिशा में जन्मी, डॉ. श्यामामणि देबी ने स्वर्गीय गुरु सिंघारी श्यामसुंदर कर और संगीत सुधाकर बालकृष्ण दास के सानिध्य में संगीत नाटक अकादमी, ओडिशा से "ओडिशी" गायन में स्नातक (संगीत विशारद) किया। उन्होंने प्रो. बी.आर. नवरंग के सानिध्य में गंधर्व महाविद्यालय, पुणे से हिंदुस्तानी गायन में स्नातकोत्तर (संगीत अलंकार) भी किया है। उन्होंने 12 साल की उम्र में आकाशवाणी के बाल कलाकार के रूप में अपना करियर शुरू किया और कटक, कोलकाता और मुंबई एआईआर स्टेशनों में ख्याति प्राप्त की। उन्होंने वर्ष 1960 और 1970 के दशक के दौरान उड़िया और बंगाली फिल्मों के लिए एक प्रसिद्ध पार्श्व गायिका के रूप में भी ख्याति अर्जित की।

3. डॉ. श्यामामणि ने एक पार्श्व गायिका के रूप में अपने चरम समय पर इस ग्लैमरस करियर को त्याग दिया और अपना जीवन उस पारंपरिक संगीत को समर्पित कर दिया, जो कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित थे और विलुप्त होने की कगार पर थे। पारंपरिक संगीत "ओडिशी" ने उन्हें अत्यधिक प्रभावित किया। उन्होंने शुरू में "ओडिशी" के विभिन्न पहलुओं "चंपू", "छंदा", "चौतीसा", "भजन", "जनाना", और 'गीत गोविंद', आदि, पर ध्यान केंद्रित किया। व्यापक अध्ययन और प्रयासों के बाद इनके संगीत के साथ इन संगीत रूपों की ऑडियो कैसेट पहली बार जारी की गई और इन्हें आकाशवाणी तथा राज्य के हर नुक्कड़ और कोने में सजीव प्रदर्शन के माध्यम से आम जनता तक पहुंचाया गया। इस प्रकार इनका पुनरुद्धार किया गया और इन्हें लोकप्रिय बनाने के लिए आम जनता के समक्ष लाया गया।

4. डॉ. श्यामामणि ने शास्त्रीय "ओडिशी", ओडिशी के संबद्ध संगीत रूपों, भक्ति गीतों, आधुनिक और सुगम संगीत, लोक गीतों और पाल्ली गीतों में 4000 से अधिक गीतों के माध्यम से अपने साढ़े सात दशक से भी अधिक संगीत करियर के दौरान श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। उन्होंने विभिन्न भाषाओं में भी गाया है, जैसे हिंदी और मराठी में गज़ल, बंगाली में रवींद्र संगीत, गुजराती में गरबा और उड़िया और बंगाली में एक दर्जन फ़िल्मी गीत भी गाए हैं। उन्होंने ओडिशी संगीत के व्यवस्थित विकास और उसके व्याकरण के संहिताकरण में भी प्रमुख योगदान दिया।

5. "ओडिशी" संगीत में डॉ. श्यामामणि के योगदान को मान्यता देते हुए उत्कल संस्कृति विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर द्वारा उन्हें मानद डॉक्टरेट (पीएचडी) से सम्मानित किया गया है। ओडिशा सरकार ने उन्हें सर्वोच्च पुरस्कार "उपेंद्र भांजो सम्मान" भी प्रदान किया है। उन्हें ओडिशा और अन्य राज्यों के और विदेशों के विभिन्न सरकारी, सार्वजनिक, निजी संस्थानों से लगभग 200 पुरस्कार, सम्मान, और 12 से अधिक खिताब जैसे "ओडिशा कोकिला," "कोकिलो कोंथी," "सुरो-तोरंगिनी", "गीता प्रिया," आदि से पहले ही सम्मानित किया जा चुका है। संस्कृति और पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार ने कई लेखों के अलावा उनके जीवन और उपलब्धियों पर एक वृत्तचित्र फिल्म जारी भी की है।